साहित्य–संगीत–कला को समर्पित

शब्दम्

चरण १०: २०१३–१४

कठपुतली नृत्य नाटिका........ पृष्ठ - 19

कबीर उत्सव .... पृष्ठ - 25

'हर बेटी को दुर्गा बनना होगा'........ पृष्ठ - 38

चरणदास चोर .... पृष्ठ - 33

जमनालाल बजाज की १२५ वीं जयंती .... पृष्ठ - 52

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००४ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं, संगीत एवम् साहित्य को प्रोत्साहित करना।

३. देश विदेश में राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

सम्पर्क:
शिकोहाबादः शशिकांत, दीपक औहरी, मोहित जादोंन
शब्दम्, हिंद लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद – 283141, फोनः (05676)234018
ई–मेलः shabdamhoskb@gmail.com, pmhoskb@gmail.com
वेबसाइट– www.shabdamhindi.com
मुंबई : टचस्टोन एडवरटाइजिंग, मुंबई फोन– 022–22885114

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण १०: २०१३-१४

शब्दम् न्यासी मंडल

अध्यक्ष

श्रीमती किरण बजाज

उपाध्यक्ष

प्रो. नन्दलाल पाठक

श्री उदय प्रताप सिंह

(अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)

श्री सोम ठाकुर

वरिष्ठ सदस्य

श्री शेखर बजाज

श्री मुकुल उपाध्याय

विशिष्ट सलाहकार

श्री बालकृष्ण गुप्त

श्री उमाशंकर शर्मा

डॉ.ओमप्रकाश सिंह

डॉ. अजय कुमार आहूजा

डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया

डॉ. महेश आलोक

श्री मंजर उल वासै

डॉ. रजनी यादव

श्री अरविंद तिवारी

विशिष्ट आमंत्रित सलाहकार

सुदीप्ता व्यास (न्यूज़ीलैण्ड)

सज्जा

टचस्टोन एडवरटाइज़िंग, मुंबई

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

अनुक्रम

अध्यक्षीय निवेदन............ 3

वार्षिक अनवरत कार्यक्रम

सातवां ग्रामीण कवि सम्मेलन............ 5

आठवां ग्रामीण कवि सम्मेलन............ 8

शिक्षक दिवस............11

हिन्दी संस्कृति सप्ताह............13

स्थापना दिवस............16

समन्वय / प्रायोजित कार्यक्रम

कठपुतली नृत्य नाटिका............19

ताज साहित्य............23

कबीर उत्सव............25

'बंसत मेलोडी'............28

सरोद वादन............30

चरणदास चोर............32

सतत् एवं स्थायी कार्यक्रम

शब्दम् 'बालिका–महिला पाठशाला'............ 34

विद्यादानम् महादानम् जागरूकता............ 35

शब्दम् 'बालिका–महिला सिलाई केन्द्र'............ 36

'हर बेटी को दुर्गा बनना होगा'............ 38

बहन बचाओ............ 40

महिला दिवस............ 42

प्रश्नमंच............ 43

विविधा

शिल्पा वेल्कर द्वारा चित्रकला प्रदर्शनी............ 47

सांस्कृतिक कार्यक्रम

रामनवमीं............ 48

गीता जयन्ती............ 50

जमनालाल बजाज की 125 वीं जयंती............ 52

युगीन काव्या............ 57

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

अध्यक्षीय निवेदन

किसी शायर ने कहा है–

"सियासतों का मरम अहले सियासत जानें
मेरा पैगाम मुहब्बत है जहां तक पहुंचे।"

संगीत, साहित्य और कला मनुष्य के अनुराग, राग और संवेदना का संगम है।

सांस्कृतिक संस्थाओं का काम व्यक्ति को संवेदनशील बनाकर रचनात्मक ढंग से उसे भीतर से सशक्त करता है। संवेदनशील मजबूत व्यक्ति ही समाज और देश की सेवा और प्रगति कर सकता है।

इतिहास साक्षी है कि सत्ता की राजनीति के उद्देश्य दूरगामी नहीं हो सकते लेकिन कला, संगीत और साहित्य की संस्कृतियां युगों तक प्रभाव डालती हैं।

इसी भावना को ध्यान में रखते हुए दस वर्ष पूर्व 2004 में 'शब्दम्' का जन्म हुआ। अपने उद्देश्यों के अनुरूप साहित्य, संगीत एवं कला के प्रसार के लिए निरंतर कार्य करते हुए वर्ष 2014 में 'शब्दम्' ने दस वर्ष पूरे किये।

इस दस वर्षीय कार्यकाल में शब्दम के माध्यम से अनेक महान विभूतियों –साहित्यकारों, संगीतकारों और शीर्ष कलागुरुओं से व्यक्तिगत एवं संस्थागत रूप से जुड़ने, सेवा करने और सीखने का जो अवर्णनीय अवसर मिला,उसके लिए मैं अपने आपको एवं शब्दम् संस्था को धन्य मानती हूँ।

हमने साहित्यिक–सांस्कृतिक तथा शिक्षण संस्थाओं के साथ मिलकर हिन्दी साहित्य, भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं कला के प्रसार के विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों, प्रायोजित कार्यक्रमों एवं सतत् गतिविधियों का संचालन किया। इनसे युवा पीढ़ी सहित समाज के अन्य वर्गो को अपने साहित्य–संस्कृति को जानने, समझने एवं जुड़ने का अवसर मिला।

दसवें स्थापना दिवस पर शब्दम ने देश–विदेश में भारतीय शास्त्रीय परम्परा को प्रसारित करने में अमूल्य योगदान देने

वाली संस्था 'स्पिक मैके' एवं उसके संस्थापक/अध्यक्ष को "संस्कृति सम्मान" देकर "संगीत–कला की भारतीय परम्परा" को सम्मानित किया।

मेरा मानना है कि प्रकृति एवं संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं और इसका संरक्षण एवं संवर्धन विश्व के प्रत्येक मानव का कर्तव्य है। विश्व का कोई भी देश इन दोनों के अस्तित्व के बिना रह नहीं सकता और न ही आगे बढ़ सकता है। अतः ज़रूरत इस बात की है कि शिशु–कक्षा से ही शिक्षण संस्थाओं में संगीत, नाटक, कविता, कहानी, विविध कलाओं एवम् पर्यावरण सम्बन्धी कार्यशालाओं के माध्यम से विद्यार्थियों के मध्य उनकी रुचि एवं रचनात्मक शक्ति का विकास कर उनका सर्वांगीण विकास किया जाए।

शब्दम् का दसवां अंक आपके सामने है। आशा है आप अपने रचनात्मक सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत कराएंगे जिससे हमें आगे बढ़ने का मागदर्शन और सम्बल मिलेगा।

शब्दम् की इस दसवर्षीय यात्रा में संस्था के न्यासी मंडल के सम्मानित सदस्यगण प्रो. नन्दलाल पाठक, श्री उदयप्रताप सिंह, श्री मुकुल उपाध्याय एवं श्री शेखर बजाज के विशेष सहयोग के बिना यहां तक पहुँचना संभव नहीं था। इसमें एक महत्वपूर्ण नाम न्यूजीलैंड में सहयोग कर रही प्रवासी भारतीय श्रीमती सुदीप्ता व्यास का है जो शब्दम को विदेशी धरा पर स्थापित करने का अमूल्य कार्य कर रही हैं।

शब्दम् परिवार के सलाहकारों– श्री उमाशंकर शर्मा, डा. ओमप्रकाश सिंह, डा.ए.के. आहूजा, श्री मंजर उल वासै, डा. रजनी यादव, डा. महेश आलोक एवं श्री अरविन्द तिवारी का हृदय से आभार मानती हूँ जिनका अनवरत सहयोग मिलता रहा है।

इस यात्रा में हमारा साथ निभाने वाली अनेक सहयोगी संस्थाएं जैसे– टचस्टोन एडवरटाइज़िंग मुम्बई, हिन्दुस्तानी एकेडमी, उ. प्र. हिन्दी संस्थान, स्पिक मैके, सहेज फाउंडेशन, लक्ष्मीनारायण देवस्थान ट्रस्ट, वर्धा, प्रयास–न्यूजीलैंड सहित फिरोजाबाद जनपद एवं अन्य स्थानों के सहयोगी शिक्षण संस्थाओं का आभार प्रकट करती हूँ।

बजाज समूह, मीडिया मित्रों, हिन्द लैम्प्स परिवार के सदस्यों तथा शब्दम्–पर्यावरण मित्र के कर्मठ कार्यकताओं सहित अन्य प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग देने वाले सभी सहयोगियों एवं संस्थाओं का अंतस से आभार प्रकट करती हूँ।

सहयोग देने वाले सभी प्राचार्यों, संस्कृति प्रेमियों, विद्यार्थियों एवं समस्त पाठकों का आभार प्रकट करती हूँ।

करण बजाज

वार्षिक अनवरत कार्यक्रम

'सत्ता की उस राजवधू को लूटा पहरेदारों ने' सातवां ग्रामीण कवि सम्मेलन

"जो उलझ कर रह गयी है फाइलों के जाल में, गांव तक वो रोशनी आएगी कितने साल में।"

अदम गोंडवी की ये पंक्तियां हमारे गांवों में विकास की अनुपस्थिति को दर्शाती हैं। गांवों में भौतिक विकास से ज़्यादा सांस्कृतिक विकास की कमी होती जा रही है।

19 जनवरी 2014 को ग्रामीण कवि सम्मेलन का सातवां आयोजन जूनियर हाईस्कूल, ग्राम कंथरी में किया गया। मुरैना (मध्यप्रदेश) के बीहड़ क्षेत्र से आए कवि राजवीर सिंह भारती ने नई पीढ़ी के बिगड़े संस्कारों के संबंध में अपनी कविता के माध्यम से कहा कि टीवी और मोबाइल फोन बच्चों का दुश्मन बन गया है। यह बीमारी अब शहर से गांवों में भी पहुंच गई। ओजस्वी कवि कुलदीप 'अंगार' ने देश प्रेम की भावना को कुछ इस प्रकार स्वर दिये, 'जिसका प्रतिदिन अभिषेक किया वीरों की रक्त फुहारों ने, सत्ता की उस राजवधू को लूटा पहरेदारों ने।'

गीतकार डॉ. राकेश सक्सेना ने कहा, 'नई सदी के दौर का ये मनचला मिज़ाज है, राम जाने ये किस तरफ जा रहा समाज

ग्रामीण कवि सम्मेलन में काव्यपाठ करते हुए कवि बी.एस.ए. डॉ. जितेन्द्र सिंह यादव।

ग्रामीण कवि सम्मेलन में काव्यपाठ करते हुए
कवि सुरेन्द्र सार्थक।

है। खान–पान चाल–ढाल पश्चिमी लिबास है, चमक–दमक की जिंदगी है, भोग है विलास है।'

राजस्थान के अलवर जिले से आए कवि सुरेन्द्र सार्थक ने बेटियों को बचाने के लिए एक मार्मिक कविता का पाठ करके उपस्थित जनसमुदाय को सोचने पर विवश कर दिया। कविता पाठ करते हुए श्री सार्थक ने कहा, 'उन दृश्यों को देखकर मेरी अंतरात्मा रोती है, कराहती है। बाबू, एक कन्या ऐसा नसीब लेकर क्यों आती है।'

एक अन्य रचना में उन्होंने कहा 'सच्चाई का हथौड़ा मुकद्दर में सितारे जड़ भी सकता है, अगर हो नीयत में खोट तो उल्टा पड़ भी सकता है।'

महिलावर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए कवयित्री सुधा अरोड़ा ने न्यौछावर हो गई वीरांगनाओं की स्मृतियों को प्रस्तुत कर उपस्थित युवाओं एवं युवतियों के हृदय में

ग्रामीण कवि सम्मेलन में काव्यपाठ करते हुए
कवि कुलदीप अंगार।

देशप्रेम के भावों को भरा। उन्होंने कविता प्रस्तुत की – 'देवभूमि पै मैं वीर बेटियों का वंश हूँ, लक्ष्मीबाई पद्मिनी का मैं भी एक अंश हूँ।'

कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के अध्यक्ष श्री उदयप्रताप सिंह ने ग्रामीणों के बीच कविता के संस्कार पैदा करने के लिए अपने काव्यपाठ में कहा – ''परतंत्रता के अभिमान को भुलाने हेतु, राष्ट्रीयता का स्वाभिमान भी जरूरी है। किंतु अब भी अंग्रेजी को निज भाषा जो मानते हैं, उनके

ग्रामीण कवि सम्मेलन में काव्यपाठ करती हुई
कवयित्री सुधा अरोड़ा।